MJC-3

महाजनपद काल

छठी शताब्दी ई० पू० में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं पश्चिमी बिहार में लोहे के व्यापक प्रयोग होने से अनाज का अत्यधिक उत्पादन होने लगा। इसके अतिरिक्त अन्य आर्थिक परिवर्तन के कारण विविध शिल्पों का उदय होने लगा। परिणामस्वरूप उत्तरवैदिक काल के जन (कबीला) उत्तर वैदिक काल में जनपद के रूप में बदल गए। जैसे :- भरत + पुरु कबीले मिलकर कुरु जनपद तथा तुर्वस एवं क्रिवि जन मिलकर पांचाल जनपद में परिवर्तित हो गए। उत्तर वैदिक काल के अंतिम चरण में (छठी शताब्दी ई० पू०) विभिन्न जनपद अब महाजनपद में परिवर्तित हो गए।

जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र एवं बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। ये 16 महाजनपद निम्नलिखित है -

1. अंग :- इसकी राजधानी चम्पा थी। उत्तरी बिहार के भागलपुर के कुछ क्षेत्र तथा मुंगेर जिले का कुछ क्षेत्र मिलकर अंग जनपद (महाजनपद) का निर्माण करते थे। चम्पा नामक नगर की रूपरेखा महागोविंद ने तैयार की थी। चम्पा नगर व्यापार - वाणिज्य हेतु प्रसिद्ध था।

2. मगध :- इसकी राजधानी राजगीर (गिरिव्रज) थी, बाद में पाटलिपुत्र बनी। मगध महाजनपद का क्षेत्र - पटना, गया तथा शाहाबाद के अन्तर्गत पड़ता था। मगध के उत्कर्ष के दौरान तीन वंश यथा; हर्यक वंश, शिशुनाग वंश तथा नंद वंश ने शासन किया।

3. कोसल :- सरयू नदी के क्षेत्र में यह महाजनपद पड़ता था। सरयू नदी इस महाजनपद को दो भागों में बाँटती थी - उत्तरी कोसल तथा दक्षिणी कोसल। उत्तरी कोसल की राजधानी श्रावस्ती तथा दक्षिणी कोसल की राजधानी कुशावती थी। कोसल का एक महत्वपूर्ण शासक प्रसेनजित था।

4. वज्जि :- वर्तमान बिहार के तिरहुत प्रमण्डल में वज्जि राज्य (महाजनपद) अवस्थित था। वज्जि आठ कुलों का एक संघ था, इसमें तीन कुल महत्वपूर्ण थे - लिच्छिवि, वज्जि तथा विदेह। लिच्छिवियों की राजधानी मुजफ्फरपुर जिले के वसाढ़ नामक स्थान से की जाती है। बुद्ध काल के सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य था।

=